आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 10 अंक : 2 अक्टूबर, 2022 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

प्रकृति के संरक्षण के लिए पशुकल्याण आवश्यक

आप सभी को विश्व पशु दिवस की शुभकामनाएं।

भारतवर्ष में लगभग 70 प्रतिशत आबादी कृषि एवं कृषि सम्बन्धी व्यवसायों पर निर्भर करती है। कृषि के साथ–साथ पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। भारत में पशुधन की संख्या विश्व के पशुओं की आबादी का लगभग 11.6 प्रतिशत है। सकल घरेलू उत्पाद के संदर्भ में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में पशुधन का योगदान 4.1 प्रतिशत है। जलवायु परिवर्तन और बढ़ती आबादी की आहार पूर्ति को पूरा करने के लिए पशुपालन को अधिक कुशल एवं सघन बनाने की आवश्यकता है। पृथ्वी पर जीवन बरकरार रखने के लिए पशुओं और मनुष्यों के बीच सन्तुलन होना भी जरूरी है, क्योंकि यह खाद्य श्रृंखला और पारिस्थितिकी तंत्र के लिए बेहद महत्वपूर्ण है अगर ऐसा नही होगा तो पृथ्वी पर जीवन की कल्पना करना मुश्किल होगा। मानव और पशु एक दूसरे पर मानव सभ्यताओं से पहले ही प्रभाव डालते थे तथा मानव जीवन शैली में परिवर्तन के कारण पशुओं के जीवन तथा पशुपालन विद्याओं पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। प्रकृति के संतुलन को बनायें रखने के लिए पशुओं के प्रति प्रेम अर्थात पशुकल्याण आवश्यक है। इसलिए पशुओं के कल्याण तथा पशुओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता के लिए हर वर्ष 4 अक्टूबर को विश्व पशु दिवस मनाया जाता है जिसे ''पशु कल्याण दिवस'' कहा जाता है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 4 अक्टूबर को विश्व पशु दिवस मनाया जा रहा है जिसकी थीम ''एक साझा ग्रह है''। विश्व पशु दिवस 4 अक्टूबर को मनायें जाने के पीछे पशुओं के संरक्षण और पशु सरंक्षक कार्यकर्ता सेंट फ्रांसिस को सम्मान देना था। 24 मार्च, 1925 को जर्मनी के बर्लिन में पहला विश्व पशु दिवस सिनोलॉजिस्ट एवं पशु संरक्षण कार्यकर्ता हैनरिक जिमरमैन के द्वारा मनाया गया था, हालांकि 1931 में फ्लौरेस, इटली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय पशु संरक्षण सम्मेलन में विश्व पशु दिवस को 4 अक्टूबर को मनाने का प्रस्ताव पारित किया गया, जिसका उद्देश्य पशुओं के कल्याण के लिए बेहत्तर मानक तैयार करना है, पशुओं के प्रति मनुष्यों की क्रूरता को रोकना, पशुओं के लिए प्रकृति द्वारा बनाए गए जंगलों को बचाना, विलुप्त हो रहे पशु–पक्षियों की रक्षा करना तथा पशुओं के प्रति संवेदनात्मक भाव रखना साथ ही पर्यावरण में पशुओं के महत्व के प्रति लोगों को जागरूक करना है। क्योंकि पशु भी मनुष्यों की तरह जीने का हक रखते हैं। विभिन्न मानव क्रियाओं का पशु जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। हाल ही लम्पी स्किन बीमारी से गौ–वंश की हालत बहुत ही दयनीय हो गई है। अतः हम सभी को मिलकर पशुओं के जीवन में सुधार करने के लिए सक्रिय रूप से कार्य करने की जिम्मेदारी लेनी होगी तथा पशु अधिकारों के प्रति लोगों को ओर अधिक जागरूक करने की आवश्यकता है।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

केनाइन प्रैक्टिस पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन का आगाज

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संगठक महाविद्यालय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां, उदयपुर में इंडियन सोसायटी फॉर एडवांसमेंट ऑफ केनाइन् प्रैक्टिस की 18वीं नेशनल कांग्रेस का "न्यूवर कॉन्सेप्ट्स एंड अप्रोचेज इन स्मॉल एनिमल प्रैक्टिस एंड वेलफेयर" विषय पर तीन दिवसीय वैज्ञानिक सम्मेलन 22–24 सितम्बर तक आयोजित किया गया। सम्मेलन के अतिथि प्रो. एन.के. दक्षिणकर, कुलपति, दुर्ग छत्तीसगढ कामधेनु विश्वविद्यालय एवं प्रो. ए.के. गहलोत, संस्थापक और पूर्व कुलपति, राजुवास, बीकानेर थे। प्रो. एस.के. गर्ग, कुलपति, राजुवास, बीकानेर ने अध्यक्षता की। आईएसएसीपी के सेक्रेटरी जनरल डॉ. ए.के. श्रीवास्तव व सोसाइटी के प्रेसिडेंट डॉ. एस. प्रथाबन मंचासिन रहें। अधिष्ठाता प्रो. आर. के. जोशी ने सभी अतिथियों एवं आगन्तुकों का स्वागत किया। समापन अवसर पर प्रो. ए.के. गहलोत, पूर्व कुलपति, राजुवास, बीकानेर, अधिष्ठाता प्रो. आर.के. जोशी, निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. आर.के. धूड़िया, सोसाइटी के सेक्रेटरी जनरल डॉ. ए.के. श्रीवास्तव मंचासिन रहे। इस सम्मेलन में देश के विभिनन विश्वविद्यालयों और सोसाइटी से जुड़े हुए 300 वैज्ञानिक, विषय विशेषज्ञ, फील्ड पशुचिकित्सकों, शोधार्थी एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया। सम्मेलन के नौ सत्रों में मेडिसिन, माइक्रोबॉयोलोजी, सर्जरी एवं रेडियोलॉजी, पशु अनुवांशिकी एवं प्रजन्न, पशुपोषण, हाइजीन एंड मैनेजमेंट एवं केनाइन वेलफेयर आदि विषयों पर वैज्ञानिकों ने कुल 32 मुख्य पत्र एवं 172 शोध पत्रों का वाचन किया। प्रतिभागियों को विभिन्न केटेगरी में कुल 13 पुरस्कारों से नवाजा गया। कार्यक्रम के अंत में आयोजन सचिव प्रो. एस. के. शर्मा ने सभी अथितियों और आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

विश्व रेबीज दिवस पर श्वानों का रेबीज निरोधक टीकाकरण

विश्व रेबीज दिवस पर वेटरनरी कॉलेज और केनाइन वेलफेयर सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय टीकाकरण शिविर का आयोजन 28 सितम्बर को किया गया एवं पालतु श्वानों को रेबीज निरोधक टीके लगाए गये। वेटरनरी विश्वविद्यालय के निदेशक क्लिनिक प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि कुल 32 पालतु श्वानों को निःशुल्क रेबीज निरोधक टीके लगाए गये तथा श्वान पालकों को रेबीज के टोकन वितरीत किये गये। केनाईन वेलफेयर सोसायटी के सचिव एवं सहायक आचार्य डॉ. जे.पी. कछावा ने बताया कि इस शिविर के आयोजन में डॉ. दीपिका धूड़िया, डॉ. सीताराम गुप्ता, डॉ. ताराचन्द एवं पी.जी. व पी.एच.डी. विद्यार्थियों का सहयोग रहा।

लम्पी एवं सामान्य पशुचिकित्सा शिविर का आयोजन

नूरसर फाँटा, झालवाली गांव में 13 सितम्बर को रोटरी क्लब, बीकानेर के सहयोग से राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के चिकित्सकों द्वारा सामान्य पशु चिकित्सा एवं विशेषकर लम्पी रोग उपचार शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कुल 153 पशुओं का उपचार किया गया जिसमें गाय, बकरी एवं ऊँट इत्यादि पशु शामिल थे। अधिकांश गायों में लम्पी का प्रकोप अत्यधिक पाया गया एवं इस रोग की वजह से उनके शरीर में होने वाले घावों का भी उपचार कर आगे भी उपचार के लिये दवाओं को वितरित किया गया। महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. जे.एस. मेहता ने पशुपालकों को लम्पी रोग के उपचार एवं बचाव के लिये पशुपालकों को जानकारी देकर प्रेरित किया। शिविर में राजुवास के पशुचिकित्सक डॉ. जय प्रकाश कच्छावा, डॉ. अमित चौधरी एवं स्नातकोत्तर छात्रों ने चिकित्सकीय सेवाएं प्रदान कीं।

स्कूली बच्चों ने ली रेबीज रोग की जानकारी

वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र, राजुवास द्वारा विश्व रेबीज दिवस पर दयानन्द पब्लिक स्कूल, बीकानेर में एक जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन 28 सितम्बर को किया गया।. विद्यर्थियों को संबोधित करते हुए पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्यौगिकी केंद्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाले रेबीज रोग पर व्याख्यान दिया। विश्व रेबीज दिवस–2022 की थीम "वन हेल्थ जीरो डेथ्स" के अन्तगर्त इस रोग के नियंत्रण हेतु श्वानों के रखरखाव पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर छात्र–छात्राओं हेतु जैव चिकित्सा अपशिष्ट से संबंधित लघु फिल्म भी प्रदर्शित की गई। डॉ. मनोहर सैन ने जैव चिकित्सा अपशिष्ट के उचित निस्तारण की विस्तृत जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के दौरान भास्कर वैष्णव एवं दयानन्द पब्लिक स्कूल, बीकानेर की प्रधानाचार्य दीपिका सारण व अन्य शिक्षणगण उपस्थित रहे।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढ़वाला में लम्पी रोग उपचार हेतु पशुचिकित्सा शिविर का हुआ आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के वेटरनरी क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाड़वाला में 13 सितम्बर को पशुचिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। निदेशक क्लिनिक्स डॉ. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि शिविर के दौरान लम्पी रोग से ग्रसित 160 पशुओं का उपचार कर दवा दी गई। इसके अलावा शिविर में बांझपन, फुराव, चिंचड़ संक्रमण, पाईका जैसे रोगों का उपचार भी किया गया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि यह शिविर आगामी 5 दिनों तक क्रियान्वित रहेगा जिसके तहत घर–घर जाकर पशुओं का उपचार किया जायेगा। चिकित्सा दल में डॉ. संदीप धौलपुरिया, पशु प्रसुति एवं मादा रोग विभाग, डॉ. सीताराम गुप्ता, पशु औषधि विभाग, डॉ. महेन्द्र तंवर, पशु शल्य चिकित्सा विभाग एवं डॉ. नरेन्द्र सिंह ने सक्रिय भूमिका निभाई। पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय के इन्टर्न तथा चतुर्थ वर्ष के छात्रों ने भी शिविर में सहयोग किया। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा का इस शिविर आयोजन में सहयोग रहा।

प्रो. धूड़िया को जबलपुर (म.प्र.) में मिला फैलो सम्मान

राष्ट्रीय पशु पोषण और पशु कल्याण अकादमी ने किया सम्मानित

राष्ट्रीय पशु पोषण और पशु कल्याण अकादमी द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रो. आर.के धूड़िया को प्रतिष्ठित फैलो अवार्ड से 21 सितम्बर को नवाजा गया है। प्रो. धूड़िया को नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश) में "सतत् पशुधन उत्पादन के लिए समन्वित पोषण, स्वास्थ्य और विस्तार दृष्टिकोण" विषय पर आयोजित दो दिवसीय सम्मेलन में पशु पोषण के क्षेत्र में विशेष कार्यों के तहत यह सम्मान प्रदान किया गया। प्रो. धूड़िया को पशु पोषण के क्षेत्र में किये गए विशेष अनुसंधान व उत्कृष्ट कार्यों के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया। देश की प्रतिष्ठित पशु पोषण एसोसिएशन, अखिल भारतीय पशुपोषण सोसाइटी और इण्डियन सोसाइटी फॉर एडवांसमेंट ऑफ केनाइन प्रैक्टिस द्वारा पूर्व में भी प्रो. धूड़िया को फैलो अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है। प्रो. धूड़िया वर्तमान में वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति के विशेषाधिकारी एवं निदेशक प्रसार शिक्षा है।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 3 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 7, 8, 13, 14, 24 एवं 27 सितम्बर को गांव रामपुरा, जसरासर, ढ़ाढरिया, कड़वासर, आसलू एवं सिरसला गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 29–30 सितम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 190 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 6, 9 एवं 16 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 13–14 एवं 21–22 सितम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 205 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 8, 12, 15, 17, 20, 23 एवं 29 सितम्बर को गांव सिंघाना, बिठुडा, अनेसरिया, भिडासरी, सारड़ी, मिण्डासरी एवं पाटन गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 133 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 7, 8, 12, 16, 21 एवं 22 सितम्बर को गांव पीढी, नगला करौली, अस्तावन जादीद, अस्तावन कादीम, लखन एवं समन गांवों में आयोजित एक दिवसीय आफॅलाईन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 129 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 12, 14, 16, 21 एवं 27 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 91 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 7, 12, 19 एवं 24 सितम्बर को गांव जारोली, थाना का नगला, जगरीयापुरा एवं भैंसनीकापुरा गांवों में तथा 22 सितम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 148 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 16, 20 एवं 22 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 61 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 6, 8, 12, 16, 22 एवं 27 सितम्बर एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर तथा 30 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 230 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 20, 22, 27 एवं 28 सितम्बर को खजोरी, देवली माचियान, बनीयानी एवं हनुवतखेड़ा गांवों में तथा दिनांक 24 सितम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 139 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 15 एवं 23 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण तथा 12–13, 19–20 एवं 29–30 सितम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 147 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 7, 12, 15, 20 एवं 22 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 13 एवं 23 सितम्बर को गांव परसरामपुरा एवं जाजर गांव में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 198 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 2, 6, 8, 14 एवं 28 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण तथा 13 सितम्बर को गणेशपुरा गावं में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 157 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा दिनांक 2, 3, 6 एवं 12 सितम्बर को गांव पादरड़ी, डूंगरीफला, मांडवाबेरा भाई एवं हथोड़ गांवों में एक दिवसीय आफॅलाईन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 120 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 9, 12, 19 एवं 23 सितम्बर को गांव भगवान, रामसरा, फेफाना तथा मालवानी गांवो में एक दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 107 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

कीमती घोड़ों को ग्लैंडर्स से बचायें

ग्लैंडर्स अथवा फारसी रोग प्रमुख रूप से घोड़ों में पाया जाने वाला जीवाणु जनित संक्रामक एवं पशुजन्य रोग है जो कि ''बरखोल्डरिया मैलियाई'' नामक जीवाणु से होता है। ग्लैंडर्स एक संक्रामक रोग है जिसमें बीमारी के जीवाणु पशुओं के शरीर में फैल जाते है जिससे पशु शरीर में गांठे पड़ जाती है, मुंह से खून निकलने लगता है और श्वांस सम्बन्धी समस्या भी बढ़ जाती है। घोड़ों में होने वाली इस बीमारी से मनुष्यों को भी खतरा हो सकता है। यह जीवाणु घोड़ों के अलावा गधे और खच्चरों को भी संक्रमित कर सकता है। यह बीमारी संक्रमित पशुओं से मनुष्यों में भी फैल सकती है। संक्रमित चारे और पानी से यह बीमारी अन्य घोड़ों में फैलती है। हमारे देश के कुछ राज्यों में घोड़ों में इस घातक रोग का संक्रमण देखा गया है।

लक्षण :–

- ❖ तेज बुखार का होना और पशु का सुस्त पड़ जाना।
- ❖ त्वचा पर घाव या फोड़ा हो जाता है साथ ही यह घाव पेरों पर भी पाये जाते हैं।
- ❖ प्रभावित अश्वों के ऊपरी श्वसन तंत्र एवं फेफड़ों में भी घाव हो जाते हैं।
- ❖ सांस लेने में दिक्कत होना व खांसी आना तथा न्युमोनिया जैसे लक्षण प्रकट होते हैं।
- ❖ नाक से पानी अथवा गाढ़ा पीला तरल निकलना।
- ❖ नाक के अंदर छाले एवं घाव दिखना।
- ❖ मुंह से खून निकलना।
- ❖ अत्यधिक पसीना आने लगता है।
- ❖ पेरो, जोड़ों, अंडकोष व सबमैक्सीलरी ग्रंथि में सूजन हो जाना।
- ❖ अंत में सैप्टीसीमिया से संक्रमित अश्व की मौत हो जाती है।
- ❖ नाक और त्वचा पर हुए घावों से निकलने वाले संक्रमित स्त्राव से ग्लैंडर्स बीमारी फैलाने वाला जीवाणु ''बरखोल्डरिया मैलियाई'' दूसरे पशुओं एवं इंसानों में भी संक्रमण फैलाता है।

उपचार :– रोग की प्रारम्भिक अवस्था में एन्टीबॉयटिक तथा लक्षणों के आधार पर उपचार किया जा सकता है। चूंकि ये एक घातक पशुजन्य रोग है अतः घोड़ों को या तो जीवन भर अलग रखा जाये या फिर यूथेनाइज करना ही एक मात्र उपाय है।

रोकथाम :–

- ❖ इस रोग को खत्म करने के लिए एक ही उपाय है कि जिन पशुओं में ग्लैंडर्स की बीमारी के लक्षण पाये जाते है उनको मार दिया जाता है।
- ❖ संक्रमित पशु को मारने के बाद जमीन में कम से 10 फीट गहराई के गड्ढे में दफनाया जाता है तथा ऊपर चूने की मोटी परत डाल दी जाती है जिससे इस बीमारी के जीवाणु वातावरण में ना फैले।
- ❖ जब किसी घोड़े में इस बीमारी के लक्षण पाये जाते हैं तो अश्वपालक के परिवार के सदस्यों के भी सैंपल लेकर जांच करवानी चाहिए।
- ❖ इसके अलावा संक्रमित अश्व के अस्तबल अथवा बांधने की जगह से लगभग 4–5 किलोमीटर के दायरे में रह रहे पशुओं की भी जांच करवानी चाहिए।
- ❖ इस बीमारी से संक्रमित होने पर किसी भी व्यक्ति को केवल प्रथम अवस्था में ही उपचार देकर बचाया जा सकता है। इसके बाद इस बीमारी का इलाज बहुत मुश्किल है तथा इसके बचाव का कोई भी टीका उपलब्ध नहीं है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अक्टूबर, 2022

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
ब्लेक क्वाटर (बी.क्यु.)	गाय, भैंस	–	–	–	हनुमानगढ़
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	जैसलमेर	उदयपुर, टोंक, गंगानगर, चूरू, बीकानेर, भीलवाड़ा, पाली, सीकर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, नागौर, अजमेर, जयपुर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जोधपुर	–	–	–
खुरपका–मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	–	–	–	चित्तौड़गढ़, गंगानगर, हनुमानगढ़
पी.पी.आर.	बकरी	जयपुर, पाली	–	–	जालोर, डूंगरपुर, भीलवाड़ा, अजमेर, प्रतापगढ़, बीकानेर, झुंझुनू, नागौर, सीकर, उदयपुर, सिरोही, चितौड़गढ़, सवाई माधोपुर, टॉक
माता रोग	भेड़, बकरी	झुंझुनू	–	–	–
तिबरसा	गाय, भैंस, ऊँट	जोधपुर	–	कोटा, अजमेर, उदयपुर	अलवर, बांसवाड़ा, बांसवाड़ा, बाड़मेर, बारां, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौडगढ़, चुरू, दौसा, धौलपुर, डूंगरपुर, जैसलमेर, करोली, जयपुर, जालौर, झालावाड़, प्रतापगढ़, राजसमन्द, सवाईमाधोपुर, सीकर, टोंक
एवियन बोचुलिस्म	पक्षी	–	–	नागौर	–
गाँठदार त्वचा रोग	गाय, भैंस	गंगानगर, हनुमानगढ, बीकानेर, जोधपुर, जालोर, जैसलमेर, चूरू, पाली, बाड़मेर	नागौर, सीकर, झुंझुनू, पाली	जयपुर, भरतपुर,धोलपुर, दोसा,सिरोही, कोटा,बारां, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, बांसवाडा, करोली,बूंदी, टोंक, प्रतापगढ़, सवाईमधोपुर	–

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं. 0151-2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

नवजात बछड़ों का पालन पोषण

नवजात बछड़े बड़े होकर पशुपालकों की गाय, भैंस, सांड या भैसा बनते हैं अतः यह आवश्यक है कि भविष्य की पशु संपदा की रक्षा व उचित देखभाल की जानी चाहिए। जीवन के प्रथम कुछ सप्ताह इन बछड़ों के लिए विशेष महत्व के होते हैं जैसे ही बछड़ा मां के गर्भ से बाहर आता है उसकी मां उसे चाट कर साफ करती है और यह बछ़ड़ा आधे घंटे से 2 घंटे के भीतर अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है यदि बछड़ा अपने आप खड़े होने में कठिनाई महसूस करता है तो उसे सहारा देकर खड़ा करने का प्रयत्न करना चाहिए खड़े होने के तुरंत बाद में मां के थन चूसने का प्रयास करता है तथा थन में सिर मारता है इसलिए यह आवश्यक है कि प्रथम बार थनों का हाथों से पकड़ कर बछड़े के मुंह में डाल दिया जाए ताकि वह दूध पी सके। कभी–कभी बछड़े की सफाई उसकी मां द्वारा ठीक से नहीं हो पाती है और बछड़े के नथुनों और मुंह के चारों ओर श्लेष्मा या अन्य श्राव चिपके रहते हैं जिससे बछड़े आसानी से सांस नहीं ले पाते हैं ऐसी स्थिति में इन बछड़े के मुँह व नथुनों के आस–पास लगे श्लेष्मा या अन्य श्रावों को गीले कपड़े से भलीभांति साफ कर देना चाहिए तथा उसके वक्ष को दबाकर श्वसन क्रिया में सहायता प्रदान करना उचित रहता है। बछड़े के गर्भ से बाहर आने के तुरंत बाद मां की नाभि रज्जु टूट जाती है अतः नाभि से लगभग एक–डेढ़ इंच की दूरी पर इस रज्जू में गांठ बांध देनी चाहिए इस गांठ से लगभग एक इंच नीचे को निरजीवाणुकृत कैंची या नए ब्लेड से काटकर उस पर टिंचर आयोडीन 2 प्रतिशत जिनसन वायलेट या स्प्रिट या अन्य कोई भी जीवाणु रोधक क्रीम या एंटीसेप्टिक क्रीम लगा देनी चाहिए ऐसा करने से इन बछड़ों को नाभि संक्रमण से बचाया जा सकता है। प्रसव के पश्चात 4 से 5 दिनों तक माता पशु का दूध अत्यंत गाढ़ा होता है जिससे सामान्यतः खीस कहा जाता है इस खीस में प्रतिपिण्ड प्रोटीन की मात्रा बहुतयात में उपलब्ध रहती है इसलिए यह आवश्यक है कि नवजात बछड़े को यह खीस पिलाई जाए। नवजात बछड़े में सक्रिय रोधक्षमता की कमी होती है क्योंकि यह मादा पशु के प्रतिपिण्डव गर्भस्थ शिशु तक नहीं पहुंच पाते हैं इस कारण इन बछड़ों को खीस पिलाना अत्यंत आवश्यक है प्रतिपिण्डों का अवशोषण बछड़े की आंतों में जन्म के 20 से 26 घंटे तक ही हो सकता है इस कारण यह आवश्यक है कि इस बछड़े इस अवधि के भीतर उचित मात्रा में खीस प्राप्त कर लें। थन से दूध पिलाने के लिए आवश्यक है कि बछड़े के मुँह में प्रथम बार थन डाला जाए ताकि वो आसानी से थन चूस सके। बछड़े को 3 से 4 सप्ताह तक केवल दूध ही दिया जाना चाहिए। 4 से 10 सप्ताह तक संपूर्ण दूध की स्थान पर वसा रहित दूध या दूध विस्थापक पदार्थ उपयोग करना हितकर रहता है। 2 सप्ताह का होने के पश्चात इन बछड़ों के सामने नमक का ढेला या खनिज लवण की ईंट रख देनी चाहिए ताकि वो इसको थोड़ा–थोड़ा चाटता रहे। जन्म से 10–15

दिन के बाद बछड़े को कुछ मात्रा में दला हुआ अनाज जैसे जो, गेहूं का दलिया थोड़ी–थोड़ी मात्रा में शुरू कर देना चाहिए और जैसे–जैसे आयु बढ़ती जाए अनाज की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए। जब यह बछड़े एक सप्ताह के हो जाते हैं तो इनकी सींग की जड़ समाप्त करा लेनी चाहिए ताकि बड़ा होने पर इनके सींग ना बन सकें। सींग की जड़ समाप्त करने के लिए कास्टिक पोटाश अथवा सिल्वर नाइट्रेट की पेंसिल का उपयोग करते हैं इसके लिए गर्म किये गए वोल्ट अथवा बिजली की डिडबिंग यंत्र का उपयोग भी कर सकते हैं। प्रारंभ में उनको मुलायम घास या हरा मुलायम चारा जो कि अधिक रस युक्त हो दिया जाना चाहिए। नवजात बछड़े में ई–कोलाई का संक्रमण बहुतायत में देखने को मिलता है जिसके कारण एक सप्ताह या इससे कम आयु के बछड़े को दस्त लग जाते हैं इन दस्तों में सफेद पानी की तरह मल आता है अतः दस्त लगते बछड़े का उपचार करवाना चाहिए अन्यथा बछड़ें मर भी सकते हैं। इन दस्तो की रोकथाम के लिए पशुचिकित्सक की सलाह व एंटीबायोटिक ओषधी का उपयोग किया जा सकता है यह दवाएं दो–तीन दिन की उम्र के बछड़े को खिलाने से इनमें ई–कोलाई के संक्रमण की संभावना काफी कम हो जाती हैं। और पशुपालक को इन बछड़ो को 8–10 दिन का होने पर कर्मी नाशक औषधि पिलाई जाए तथा हर दो माह के बाद इसका उपयोग पशुचिकित्सक की सलाह से किया जाना चाहिए।

डॉ. नरसी राम गुर्जर (मो. 9414103084)
शिक्षण सहयोगी, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुओं में सर्पदंश का प्रबंधन व उपचार

भारत में सांपो की 306 प्रजातियां पाई जाती है जिसमें से 85 प्रजातियां जहरीली होती है, इनमें से कोबरा, रसेल वाइपर, स्केल्ड वाइपर और कैरेल बहुत खतरनाक होते है, क्योंकि भारत में सांप के काटने पर होने वाली मौतों में इनका योगदान सबसे अधिक है। सर्प व उनके काटने पर सबसे अधिक शोध हुआ है क्योंकि इनकी प्रजातियां व जहर अलग–अलग प्रकार के होते हैं। सांप जहरीले व विषरहित दोनों प्रकार के होते है। अतः इन दोनों प्रकारों का वर्गीकरण सांप की विषाक्तता की जानकारी के लिए अति–आवश्यक है।

- **विषाक्ता रहित सांप** :– इनकी पूंछ दबी हुई होती है तथा इनका पेट अनेक रेखाओं से घिरा होता है। इनके अनेक छोटे दांत होते हैं। इनके काटने पर अर्धगोलाकार दांतो के निशान बन जाते है।
- **विषयुक्त सांप** :– इन सांपो की पूंछ चपटी व सिमटी हुई होती है। सिर पर शल्क होते है इनमें दो जहरीले नालीदार दांत होते है, कटे हुए स्थान पर दो दांतो के निशान साफ दिखाई देते है तथा कभी–कभी साथ में छोटे–छोटे दांतो के निशान भी दिखाई देते है। जैसे वापेरिडी (वाइपर) वर्ग व इलेपिडी वर्ग (नाग, कोरल) के सांप।

पशुओं में सर्पदंश के लक्षणः–

एलपाइन सांप के काटने पर लक्षणः– इनका जहर मुख्यरूप से तन्त्रिका तंत्र को प्रभावित करता है, काटे गये स्थान पर दर्द व सूजन कम होती है, मांसपेशियों में कमजोरी के कारण पक्षाघात हो जाता है, निगलने में परेशानी होती है, मुंह से लार का स्त्रवण व श्वसन दर बढ़ जाती है तथा कैरत सांप काटने पर भयकर पेट दर्द भी होता है।

वाइपेरिडी सांपों के काटने पर लक्षणः– पशु उत्तेजित व बैचेन हो जाता है, काटे गये स्थान का अति गलन शुरू हो जाता है, त्वचा ठंडी पड़ जाती है, आंखों की पूतलिया फैल जाती है, अन्त में बेहोसी आ जाती है तथा श्वांस रूकने अथवा रक्त प्रवाह अवरूद्व होने पर मृत्यु हो जाती है।

सर्पदंश का प्रबंधन व उपचार

- पशु को बांधकर रखे ताकि पशु ज्यादा हरकत ना करें और जहर ज्यादा न फैले।
- पशु को शांत रखे व चलने–फिरने की अनुमति न देवें।
- जिस अंग पर सांप ने काटा हो उस अंग के ऊपर जहां से खून का स्त्राव होता है वंहा पट्टी बांध देवें। अगर पशुचिकित्सक के आने में देरी हो रही है तो पट्टी को हर 30 मिनट में खोलकर बांधे ताकि अंग में खून का स्त्राव होता रहे।
- दर्द के प्रबंधन हेतु दर्दनाशक दवा, आघात रोकने के लिए ग्लुकोकोटिकॉइड आदि देवें।
- टीटनेस का टीकाकरण भी करवाना चाहिए।
- रक्त स्त्राव होने पर रक्त चिकित्सा देनी चाहिए।
- पशुओं को भरपूर मात्रा में धीरे–धीरे नार्मल सेलाइन नस द्वारा देना चाहिए।
- सांप के जहर को सामान्य करने के लिए एन्टीवेनम अथवा विषप्रतिरोधक का उपयोग करना चाहिए। विष प्रतिरोधक का चुनाव सांप की प्रजाति पर निर्भर करता है यदि सांप की जाति की पहचान हो जावे तो मोनोवेलेंट तथा पहचान नही होने पर पोलिवेलेंट विष प्रतिरोधक दवा देना चाहिए।

डॉ. मनोहर सैन
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।

सफलता की कहानी

पशुपालन व जैविक खेती से कालूराम स्वामी को मिली नई पहचान

वर्तमान में पशुपालन व खेती समय की जरूरत है, क्योंकि खेती के साथ पशुपालन करके ही किसान अपनी आय को दुगुना कर सकता है। इसका उदाहरण बने है लूणकरणसर के गांव सहनीवाला के कालूराम स्वामी, जिन्होंने नवीन तकनीक और वैज्ञानिक प्रबंधन करके एक सफल पशुपालक बने और अपनी एक नई पहचान बनाई। कालूराम स्वामी पहले जरूरत के अनुसार ही पशुपालन करते थे बाद में परिवार के बढ़ते खर्चों को देखते हुए पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर से सम्पर्क किया। कालूराम ने निरंतर पशु विज्ञान केन्द्र से विभिन्न विषयों जैसे कृमिनाशक दवाओं का महत्व, पशुओं का वैज्ञानिक प्रबंधन, टीकाकरण, पशुओं में संतुलित आहार, अजोला घास तकनीक आदि पर प्रशिक्षण प्राप्त किए। कालूराम ने इन सभी प्रशिक्षणों में भाग लेकर अपने पशुपालन व्यवसाय को बढ़ाने की सोची। कालूराम ने वैज्ञानिक प्रबंधन से पशुपालन के साथ–साथ जैविक खेती भी शुरू कर दी। वर्तमान में कालूराम के पास 30 बीघा सिंचित कृषि भूमि, 50 बीघा असिंचित कृषि भूमि है। पशुओं में कालूराम के पास 30 गायें जिसमें 10 राठी, 13 साहीवाल व 7 क्रॉस ब्रीड गायें हैं। इनके पास 5 मुर्रा नस्ल की भैंसे भी हैं। कालूराम इन पशुओं से लगभग 150–180 लीटर दूध प्रतिदिन प्राप्त करते है। कालूराम दूध के अलावा दुग्ध उत्पादों जैसे पनीर, मावा इत्यादि को घर में बनाकर बेचते हैं। पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर के सम्पर्क में आकर गोबर से वर्मी कम्पोस्ट (केंचुआ खाद) बनाना सीखा और स्वंय वर्मीकम्पोस्ट तैयार करके अपने खेतों में उपयोग करके अन्य खाद् की निर्भरता को कम किया। इसके साथ ही कालूराम ने पशुओं के लिए अजोला घास यूनिट भी लगा रखी है और अपने पशुओं को अजोला घास को हरे चारे के रूप में खिलाते हैं। वर्तमान में कालूराम लगभग 70–80 हजार रूपये प्रतिमाह आय प्राप्त कर रहे हैं। कालूराम स्वामी अपनी इस सफलता का श्रेय अपनी मेहनत और पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर के वैज्ञानिकों को देते हैं।

सम्पर्क-कालूराम स्वामी (मो. 9166298832)
गांव सहनीवाला, तहसील लूणकरणसर (बीकानेर)

निदेशक की कलम से...

पशुपालन विकास में महिलाओं की अहम् भूमिका

भारत एक कृषि आधारित देश है और पशुधन इसका एक अभिन्न अंग है। पशुधन को आमतौर पर ग्रामीण आजीविका के लिए महत्वपूर्ण सम्पति माना जाता है तथा पशुधन कृषि क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण उपक्षेत्र भी है। भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। पशुधन के प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका काफी बढ़ रही है। अधिकांश पशुपालन गतिविधियां जैसे चारा सग्रंह, पशुओं को खिलाना व पानी देना और पशुओं के स्वास्थ्य की देखभाल, प्रबंधन, दूध दोहना, घरेलू स्तर पर प्रसंस्करण, मूल्यवर्द्धन और विपणन जैसे महत्वपूर्ण कार्य महिलाओं द्वारा किया जाता है। लगभग 70 प्रतिशत कृषि श्रमिक, 80 प्रतिशत खाध उत्पादक और 10 प्रतिशत बुनियादी खाध पदार्थो को संसाधित करने वाली महिलाएं ही है और महिलाएं 60 से 90 प्रतिशत ग्रामीण विपणन में भी हिस्सा लेती है। महिलाएं पशुपालन व्यवसाय के सतत् विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गांवों में और विशेष रूप से आदिवासी समुदायों में, काम के लिए पुरूषों के प्रवास के कारण पशु प्रबंधन के सम्बन्ध में अधिकांश कार्य महिलाओं को करना पड़ता है। कुल महिला ग्रामीण कामगारों में 8.8 प्रतिशत और कुल पुरूष ग्रामीण कामगारों में से 1.8 प्रतिशत पशुधन उत्पादन में लगे हुए हैं। महिलाएं कृषि आधारित सम्बद्व व्यवसाय जैसे डेयरी, मुर्गीपालन, बकरी–पालन, खरगोस–पालन, मधुमक्खी पालन आदि में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। दूध अथवा अन्य उत्पादों की मार्केटिंग के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका नगण्य है, इसके लिए ग्राम स्तर पर महिलाओं को प्रशिक्षित करना होगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय भी इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय के अधीन विभिन्न जिलों में पशु विज्ञान केन्द्र स्थापित किये गये है जो विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण आयोजित कर रहे हैं। विश्वविद्यालय का प्रयास है कि इन प्रशिक्षणों में अधिक से अधिक महिलाओं को प्रशिक्षित किया जाये, ताकि इस क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका ओर अधिक बढ़ेगी तो परिवार की आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

''धीणे री बात्यां''

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया